यमुना के लिए एक अपील

19 मई 2007

प्राकृतिक संसाधन के शब्दकोष से लागातार शब्द कम होते जा रहे हैं। पहले जमीन, फिर जंगल, जानवर और पानी। बीसवीं सदी में पानी व्यापार की चपेट में आ गया है। व्यावसायिक घराने अपने निर्वहन के लिए पानी को एक 'उपभोक्ता वस्तु' के रूप में देख-समझ रहे हैं। उन्हें मालूम है कि पानी के जितने हिस्से पर उनका नियंत्रण होगा उनकी व्यावसायिक उम्र उतनी ही लंबी होगी। मीठे पानी के प्रमुख स्रोतों पर खरीद बिक्री के प्रयास अब छुपे हुए रहस्य नहीं है। हमें यह समझना होगा कि जैसे जैसे जल संसाधनों पर नियंत्रण बढ़ेगा पानी का संकट गहराता चला जाएगा। जल दोहन की वस्तु नहीं है। जल संरक्षण और उपयोग का शास्वत चक्र है। यह चक्र हमारे जीवन क्रम को चलाता आ रहा है। हमरे पुरखों ने हमें जो समझ दी है वह कभी भी जल को भोग्य वस्तु नहीं बनाता। इस समझ में कमी आ गई जिसके कारण आज हम जल-संकट जैसे नये-नवेले शब्दों को अपनी शब्दावली में डाल रहे हैं।

एक बड़ी समस्या यह हो गयी है कि अब जल संरक्षण को भी हमने सरकार का काम मान लिया है। अपने उपभोग लायक अन्न पैदा कर सकते है, तो जल संरक्षण क्यों नही कर सकते? हमारी समझ में आयी इस खोट का ही नतीजा है कि सरकार अपने हिसाब से जल संरक्षण कर रही है और उस संरक्षित जल पर उद्योगों को प्राथमिकता दे रही है, और पानी तथा हमारे बीच में तरह-तरह के व्यवधान पैदा कर रही है। पानी और हमारे बीच फासला लगातार बढता गया है। सरकार की सक्रियता का परिकाम यह हुआ है कि पानी मंत्रालयों, विभागों, दफ्तरों, फाईलों का विषय बन गया है। और जहां भी ये तत्व शामिल होंगे वहां भ्रटाचार, लूट-पाट और मनमानी आना बहुत स्वाभाविक होगा। बाढ़-सुखाड़ अपनी जगह, पानी की समस्या अपनी जगह और सरकारी इंसजाम अपनी जगह। हम सभी दावे-प्रतिदावों में व्यस्त है।

पानी पर हमने, अपने समाज के एक बड़े हिस्से ने अपना हक छोड़ दिया है। हमारी जीवन में बहनेवला पानी सरकार द्वारा बनाई गयी नालियों और नहरों में पहुंच गया हैं। इसी का परिणम है कि गंदे नालों की संख्या में बेतहाशा बढ़ी है। इस सच्चाई से कौन इंकार करेगा कि अपशिष्ट पदार्थ नाले में बाद में पहुंचते है पहले वे हमारे हाथ से गुजरते हैं। पानी के प्रति हमारा यह गैर-जिम्मेदाराना रवैया सबको भारी पड़ेगा। पानी को हम उपभोग की वस्तु समझेंगे तो हमें असमय काल-कलवित होने से कोई नही बचा सकता।

दिल्ली के भूभाग पर हृदय धमनियों की तरह बहनेवाली मां यमुना के साथ हमने कृतघ्नता का व्यवहार किया है। हमने यमुना को अपने चित से उतार दिया है। इसी का परिणम है कि अब सरकारें योजनाबद्ध तरीके से उसे समाप्त कर देने के काम में जुट गई हैं। पहले ही हमारी गंदगी के भार से बोझिल यमुना का अस्तित्व मिटा देने का आखिरी प्रहार सरकार द्वारा होने ही वाला है। वह है कि इसके किनारों पर 10 हजार हैक्टेयर जमीन पर कंक्रीट का जंगल खड़ा कर दिया जाए। अरबो खरबों का व्यापार हो जाएगा और सरकार के खजाने मे भी इतना पैसा आ जाएगा कि वह कुछ और फ्लाई-ओवरों को खड़ा कर विज्ञापन छपवा देगी। लेकिन इस व्यापार में यमुना ही नहीं खत्म होगी। खत्म हो जाएगी हमारी वह समझ जो अपनी नदियों से मां का रिश्ता रखती हैं। खत्म हो जाएगा वह भारतीयता का बोध जो तमाम संकटो में भी हमें अडिग रखती है। यमुना के इस व्यवसायीकरण में हम यह भी भूल गये हैं कि एक बार के मुनाफे के लिए हम क्या-क्या गंवाने जा रहे हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि बाढ़ और भूकंप दोनों प्राकृतिक क्रियाएं हैं और इंजिनियरिंग का कोई भी तकनीक इनका तोड़ नहीं दे सकतीं। यमुना के थाले में बनी तमाम संरचनाएं सिर्फ एक बाढ़ या भूकंप से धरती में समा सकती हैं। अगर हम अभी सचेत न हुए तो आनेवाली पीढ़ी सेटेलाईट चित्रों से यमुना को खोजेगा और पश्चाताप करेगा कि हमारे पूर्वज कैजे गैर-जिम्मेदार थे कि जीती- जागती नदी को उन्होने मर जाने दिया?

यह अपील मैं दिल्ली में बैठकर लिख रहा हूं। यहीं 15 मई की सुबह एक अंगेजी अखबार में मैंने पढ़ा कि मैं यमुना बचाने के लिए दिल्ली में दो महीने से डेला डाले हूं। इस अखबार ने जो शब्द प्रयोग किया है वह है 'रेस्क्यू ऑपरेशन'। मानों जंगल में आग लगी है और 'वाटरमैन' पानी लेकर आ पहुंचा है। मुझे यह सब थोड़ा अटपटा लगता हैं। मैं खुद में इतना सामर्थ्यवान कभी नहीं हो सकता कि इस तथाकथित 'आपदा राहत' में अकेले कुछ करूं और सफल हो जाऊं। मेरी समस्त क्षमताओं का

स्रोत समाज में हैं। असली सामर्थ तो समाज में है जिसने मुझे थोड़ा उपयोग करने का मौका देकर कृतार्थ कर दिया है। मैं दिल्ली में हूं, और यमुना के सवाल को लेकल ही हूं, लेकिन यह कोई राजेन्द्र सिंह का अपदा प्रबंधन नहीं है। यह समाज की वर्तमान जरूरत है। यमुना पर आपदा आयी है इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता लेकिन प्रबंधन सब समाज को, हमको, आपको मिलकर करना होगा।आप सबसे मेरी अपील है कि अपने अपने स्तर पर जो कर सकते हैं करें मैं आपके साथ हूं। मैने एक दिया जालाया है। यही मेरा कुल सामर्थय है। एक वादा मैं जरूर करता हूं कि मैं इसे बुझने नही दूंगा। लेकिन मेरे अकेले से क्या हो सकता है? यमुना के बारे में पांच मुख्य मांगें हमने रखी है। जो इस प्रकार है।

हमारी प्रमुख मांग

1. यमुना के दोनों किनारे 10 हजार हेक्टेयर में कंक्रीट के जंगल की बजाय प्राकृतिक जंगल लगाया जाए। इसको पंचवटी के रूप में विकसित किया जाए और ऐसे वृक्ष लगाए जाएं जिनमें जल का वाष्पीकरण ज्यादा न हो और वह अपनी जड़ों में पानी को समेट कर रख सके । जैसे- पीपल, गुलर, पाकड़, बरगद, आंवला आदि।

2. यमुना के दोनो तरफ से आनेवाली प्राकृतिक जल धाराओं को पुर्नजीवित किया जाए। इसमें पश्चिम दिशा से ज्यादा जल धाराएं आती थी। इनकी कुल संख्या 23 है। इनमें से एक राजस्थान के बुढ़ा गांव से चलकर हरियाणा होते हुए नजफगढ़ के पास आकर मिलती थी। इस नदी का नाम है- साबी। यह साबी नदी सालभर जल पिलाती थी, लेकिन दुर्भाग्य से आज यह एक नाले में बदल गयी है। बाढ़ के समय यह यमुना के बाढ़ के पानी से नजफगढ़ झील को भरती थी और बाद में बाढ़ उतर जाने पर यह उस पानी को यमुना में पुनः उड़ेल देती थी। इसके कारण यमुना का अविकल प्रवाह बना रहता थ। इसलिए साबी और अन्य छोटी -बड़ी जल धाराओं को पुनर्जिवित किया जाए।

3. दिल्ली क्षेत्र में सामुदायिक वर्षाजल को संरक्षित करने हेतु पुराने तालाबों, बावड़ियों, झालड़ो और जौहड़ों को पुनर्जिवित किया जाए और दिल्ली रिज के जंगल में जहां भी संभव हो वहां नयी जल संरक्षण संरचनाओं का निर्माण किया जाए तथा दिल्ली के आरावली के भूजल को संरक्षित, सुरक्षित क्षेत्र घोषित किया जाए। इन संरचनाओं से अलवर की मशहूर अरवरी नदी की तरह यमुना भी पुनर्जिवित हो जाएगी और इसे अविरल बहाव के लिए अन्य जल स्रोतों पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा।

4. दिल्ली के पर्यटन, सभ्यता और संस्कृति के मूल केन्द्र के रूप में यमुना ही स्थित है। लेकिन इसके साथ हमारा तादाम्प धीरे-धीरे खत्म हो गया है। यमुना से हमारा संबंध केवल इतना रह गया है कि इसके उपर बने भारी भरकम पुलों पर गुजरते हुए एक बार हम खिड़की से झांककर गंदे पानी को देखते हैं और पुनः अपनी दुनिया में लौट आते है। यमुना के किनारों पर पहले से स्थित घाटों को पुर्नाजिवित किया जाए। जल और जंगल को केन्द्र में रखकर ही पर्यटन की संभवनाएं विकसित की जाए।

5. यमुना के अविरल प्रवाह को बनाये रखने के लिए यमुना में उपर से आ रहे पानी का 30 प्रतिशत नियमित छोड़ा जाए। इसके लिए सभी संबंधित राज्य सरकारों को तुरंत आवश्यक दिशा निर्देश केन्द्र सरकार जारी करे।

राजेन्द्र सिंह
और
'यमुना सत्याग्रह' के सभी साथी

शिराज केसर
मीडिया समन्वयक
9211530510